(स) उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृतिक

(UPPER PALAEOLITHIC CULTURE)

इस संस्कृति के साक्ष्य बेलन घाटी, सोन नदी घाटी, बाधौर व भीम बेटका की गुफाओं, रेनीगुंटा (जिला चित्तूर, आन्ध्र प्रदेश), महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान एवं कर्नाटक आदि अनेक पुरा-स्थलों से प्राप्त हुए हैं।

इस संस्कृति का प्रमुख उपकरण ब्लैड (Blade) है। ब्लैड पतले तथा सँकरे आकार वाला वह पाषाण फलक है, जिसके दोनों किनारे समानान्तर होते हैं एवं इसकी लम्बाई, चौड़ाई, से दूनी होती है। ब्लैड के साथ-साथ उपर्युक्त वर्णित स्थलों के कुल स्क्रेपर, बेधक व छिद्रक भी मिले हैं। इनके निर्माण में चर्ट, जेस्पर एवं फ्लिण्ट आदि पत्थरों को प्रयोग हुआ है। उच्च पुरापाषाण कालीन सांस्कृति परम्पराओं में पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त हड्डियों से निर्मित उपकरण भी प्राप्त होते हैं। अस्थियों से निर्मित उपकरणों में खुरचन यंत्र, छीन व रूखानी, छिद्रक, बेधक तथा धारदार उपकरण मिले हैं।

इस काल में अपेक्षाकृत अधिक कला व चित्रकारी से साक्ष्य मिल हैं। **कुछ स्थलों से शुतुरमुर्ग के अण्डों पर नक्काशी के साक्ष्य भी मिले हैं। भीम बेटका** से नीले रंग के कुछ पाषाण खण्ड मिले हैं। वाकणकर महोदय के अनुसार इनके द्वारा चित्रकारी के लिए रंग तैयार किया जाता होगा। इनसे उच्च पुरापाषाणकालीन मानव की कलात्मक अभिरुचि **संकेतिक** होती है। इनका जीवन यद्यपि आखेट एवं खाद्य संग्रह पर ही आधारित था, परन्तु अब ये स्थायी आवास की ओर अग्रसर थे।

इस प्रकार हम पाते हैं कि पुरापाषाण कालीन मानव केवल खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता ही था, अभी तक वह उत्पादक नहीं था। इनका जीवन पूर्णत: प्राकृतिक था। इनके व जंगली जीवों के रहन-सहन में कोई विशेष अन्तर न था। ये प्रधानत: आखेट व खाद्य संग्रह की अवस्था थी। इनका भोजन माँस एवं कन्दमूल मात्र था। अग्नि के प्रयोग से अपरिचित होने के कारण माँस कच्चा ही खाते थे। निश्चित निवास के अभाव में यायावरी अथवा खानाबदोश (घुमक्कड़) जीवन व्यतीत करते थे। कृषि, पशुपालन, लिपि ज्ञान एवं बर्तनों के निर्माण से पुरापाषाण कालीन मानव अनभिज्ञ था।